RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 July 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd July 2020

मासिक पत्रिका

# अजायब ✿ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–तीसरा | जुलाई–2020

*सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज*
**परमात्मा के रंग** 5

*सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज*
**दुःखों और परेशानियों का देश** 17

*परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से*
**लाल बुझक्कड़** 33

*सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी*
**धन्य अजायब** 34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 220 Website : www.ajaibbani.org

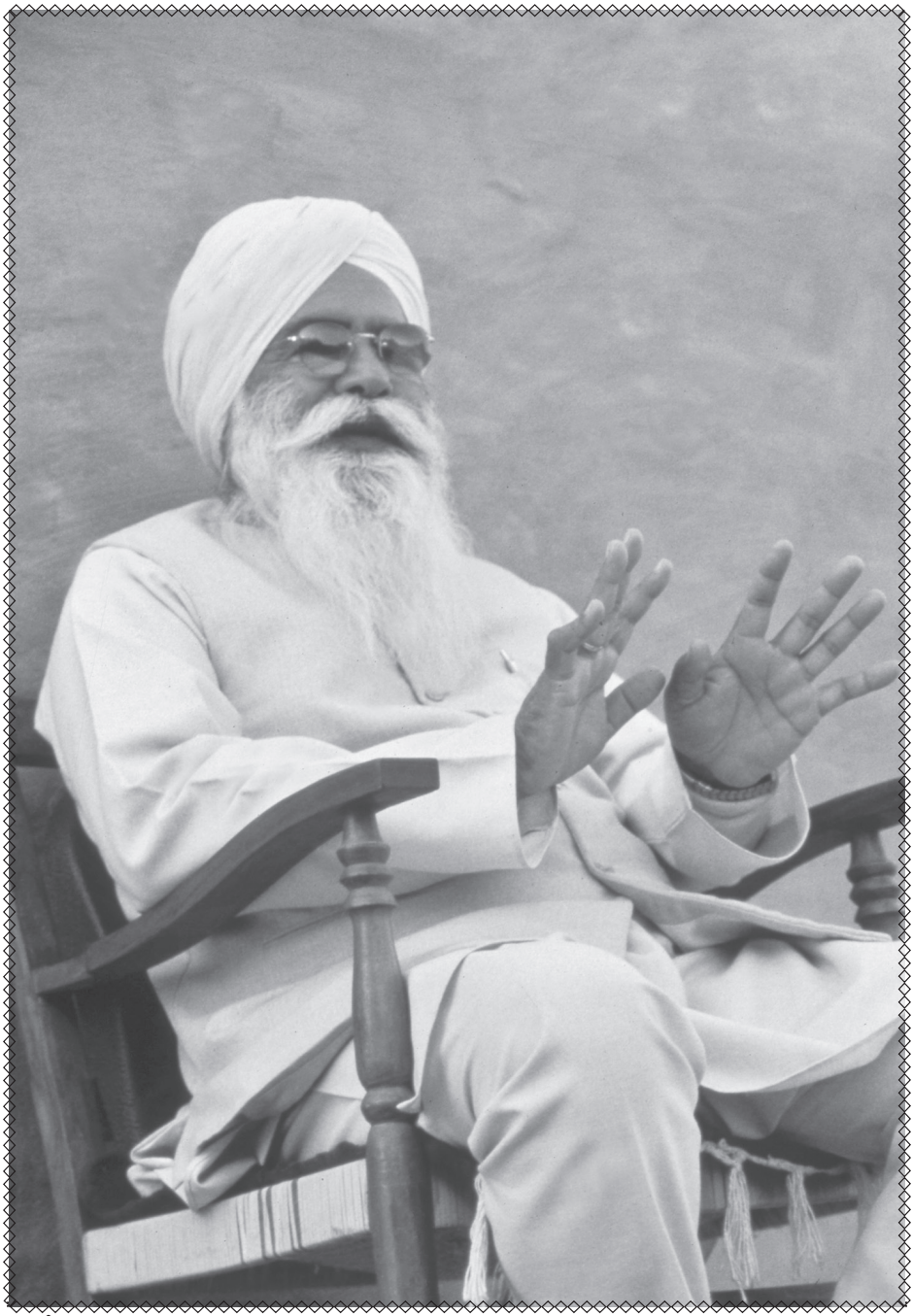

कबीर साहब की बानी

04 मार्च 1988

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# परमात्मा के रंग

16 पी.एस राजस्थान DVD - 538(2)

## ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे।

कबीर साहब के पास एक आदमी शिष्य बनने के लिए, नाम लेने के लिए आया और साथ ही वह कई सवाल भी लेकर आया। उसने कबीर साहब से कहा कि महाराज जी! आप मुझे यह बताएं कि हम इन आँखों से जो संसार देख रहे हैं क्या यह सदा रहेगा? क्या जवानी या बुढ़ापा सदा रहेगा? क्या गरीबी–अमीरी सदा रहेगी? क्या शक्तिशाली राजा या राष्ट्रपति को मौत नहीं आएगी? क्या इनकी प्रजा को मौत नहीं आएगी? अगर यह संसार सदा सत है सदा रहने वाला है, धन–पदार्थ और जवानी सदा रहने वाली है तो मुझे नाम जपने की क्या जरूरत है फिर मैं दुनिया में ऐश ही क्यों न करूं? आप इन पर रोशनी डालकर बताएं।

सन्त–महात्मा परमात्मा की तरफ से बहुत दया लेकर आते हैं, वे बहुत दयालु होते हैं। वे यह नहीं कहते कि कोई हमसे सवाल न करे। वे ठंडे दिल से बताते हैं, सेवक की जिंदगी बनाते हैं। उनके दिल में सेवक की बेहतरी होती है। अब सवाल सेवक का है कि सेवक गुरु की बात अपनाने के लिए कहाँ तक तैयार है? गुरु की बात मानने में सेवक का कोई मूल्य नहीं लगता उसे कोई समाज नहीं छोड़नी पड़ती और न सिर पर कोई बोझ उठाना पड़ता है सिर्फ ख्याल ही तब्दील करना है।

अगर हम सन्तों के वचनों को समझें तो हमारी जिंदगी बन जाती है। जहाँ बहन–भाई, यार–दोस्त हमारी मदद नहीं कर सकते वहाँ सन्तों का दिया हुआ वचन ही हमारी मदद करता है। जिस मसले को कोई वकील, मेजिस्ट्रेट नहीं सुलझा सकते उसे हम सन्तों के पास जाकर सुलझा लेते हैं।

गुरु नानकदेव जी के जीवन की एक घटना है, जिसे मैं आपको सुनाना चाहूँगा। यह घटना पहले भी कई दफा सुनाई गई है। जब गुरु नानकदेव जी महाराज सांसारिक यात्रा करके दुनिया को सतनाम का उपदेश देते हुए करतारपुर बेदियां में आकर ठहरे। करतारपुर बेदियाँ रावी दरिया के नजदीक है। आप यहाँ खेती–बाड़ी करने लगे। साध–संगत की सेवा करने लगे और आपने नाम का प्रचार भी किया।

एक जिज्ञासु नित्त–नियम से रोज सुबह तीन बजे दरिया पार करके गुरु नानकदेव जी के दर्शनों के लिए आता था। वह दरिया में स्नान करके अभ्यास में बैठ जाता था। एक बार ऐसी मौज हुई कि उस जिज्ञासु ने जब दरिया में डुबकी लगाई तो वह मगरमच्छ के मुँह में चला गया। एक मछेरे ने अपनी किस्मत आजमाने के लिए दरिया में जाल फैंका, उसके जाल में छोटी–छोटी मछलियों के साथ एक मगरमच्छ भी फँस गया। मछेरा बहुत खुश हुआ कि आज मेरी सोई हुई किस्मत जागी है मुझे बहुत पैसे मिलेंगे।

घर जाकर उस मछेरे ने मगरमच्छ का पेट काटा तो मगरमच्छ के पेट में से एक बेहोश आदमी निकला जिस पर खरोंच का एक भी निशान नहीं था। जब मछेरे ने उस आदमी को स्नान करवाया तो उसे होश आ गया लेकिन वह अपना पिछला जन्म भूल चुका था। मछेरे का कोई लड़का नहीं था, वह उसे पाकर बहुत खुश हुआ कि परमात्मा ने मुझ पर बहुत भारी दया की है। मुझे बिना किसी मेहनत–मुश्क्कत के नौजवान बेटा मिल गया है। मछेरे के पास बहुत धन था उसने उस नौजवान की शादी अच्छे घराने में कर दी। उसके घर दो लड़के और दो लड़कियाँ पैदा हुई। पहली शादी से भी उस नौजवान के दो लड़के और दो लड़कियाँ थी।

उस नौजवान की पहली बीवी और बच्चों ने उसकी बहुत खोज की। जब वह न मिला तो थाने में भी रिपोर्ट लिखवाई। कोई नतीजा न निकलने पर वे मालिक का भाणां समझकर चुप हो गए।

एक बार वहाँ मेला लगा। वह नौजवान अपनी बीवी और बच्चों के साथ उस मेले में गया। उस मेले में उसकी पहली बीवी ने अपने पति को पहचान लिया और भागकर उसकी बाजू पकड़कर बोली, ''प्यारे पति जी! आप इतने दिन कहाँ रहे?'' नई पत्नी पहले वाली पत्नी पर शेर की तरह झपटी और कहने लगी, ''मेरे पति पर कब्जा करने वाली तू कौन सी सौतन है?'' लेकिन वे दोनों ही अपनी-अपनी जगह सच्ची थी।

उन्होंने नगर के अफसर के पास जाकर मुकद्दमा दर्ज किया लेकिन वहाँ कोई फैसला नहीं हो सका। अदालत में भी गए वहाँ भी कोई अफसर इस मसले को नहीं सुलझा सका। आखिर किसी ने सलाह दी कि रावी दरिया के किनारे गुरु नानकदेव जी के पास जाएं, वे ही इस मसले का हल निकाल सकते हैं।

दोनों औरतों ने गुरु नानकदेव जी के पास जाकर अपने दुःखी दिल की हालत सुनाई। गुरु नानकदेव जी ने मुस्कुराकर कहा, ''बेटी! तुम दोनों अपनी-अपनी जगह पर सच्ची हो लेकिन **परमात्मा के रंग** को कौन समझ सकता है? हम परमात्मा से इजाजत ले लेते हैं अगर करतार की मौज हुई तो तुम्हारा फैसला हो जाएगा। तुम दोनों अपने पति के दाएँ और बाएँ खड़ी हो जाओ और सतनाम कहकर इसकी बाजू पकड़कर अपनी-अपनी तरफ खींचो।'' जब दोनों औरतों ने उस नौजवान को अपनी-अपनी तरफ खींचा तो एक ही शक्ल के दो आदमी बन गए। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''बेटी तुम दोनों अपनी-अपनी घर-गृहस्थी चलाओ।'' शब्द में भी लिखा है:

***नारी ते जो पुरख करावे पुरखन ते जो नारी हो।***

ऐसी बातों को समझना बहुत मुश्किल होता है लेकिन किसी-किसी सन्त के जीवन में ऐसी घटना भी घट जाती है। सन्तमत का इतिहास ऐसे वाक्यों से भरा पड़ा है। परमात्मा सन्तों के अंदर अपनी शक्ति रखकर काम करता है। परमात्मा पुरुष को नारी और नारी को पुरुष बना सकता

है। वह जल की जगह थल और थल की जगह जल कर सकता है; वह बड़ा बेपरवाह है। मारने वाले से रक्षा करने वाला बड़ा है।

जब इब्राहिम को आग पर चलाया गया तो अंगारे फूल बन गए। जब भक्त प्रह्लाद को उसकी जादूगरनी बुआ आग में लेकर बैठ गई थी तब भी उस करण–कारण परमात्मा गुरुदेव ने प्रह्लाद की रक्षा की। वह रक्षा करते हुए देर नहीं लगाता लेकिन सवाल अपनी श्रृद्धा, प्यार और भरोसे का है। कबीर साहब कहते हैं:

*जाको राखे साईयां, मार सके न कोए।*
*बाल न बाँका कर सके, जे जग बैरी होय।।*

कबीर साहब उस सेवक से कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू जो इन आँखों से इस संसार को देख रहा है यहाँ पर कोई पशु, पक्षी, पहाड़, दरिया या देवी–देवता सदा नहीं रह सकता। अपनी–अपनी बारी आने पर सभी चले जाते हैं, देवी–देवताओं की आयु लम्बी होती है।''

गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी कहा था कि अनेकों शिव हुए हैं और अनेकों ही होंगे। अनेकों ही राम, कृष्ण के अवतार हुए और अनेकों ही होंगे। एक युग के पीछे दूसरा युग चक्कर लगा रहा है। हर युग के आखिर में अवतार ब्रह्म में से आता है। वह अवतार संसार में मर्यादा कायम रखने के लिए आता है क्योंकि काल नहीं चाहता कि मैंने जो रचना रची है, मेरे देश में कोई करप्शन फैले। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*लख लख ओत्थे मौहम्मदा लख ब्रह्मे विष्णु महेश।*
*किसे शान्त न आवे बिन सतगुरु के उपदेश।।*

यहाँ लाखों ही पीर–पैगम्बर हुए हैं और लाखों ही होंगे। लाखों ही विष्णु हैं लेकिन गुरु का उपदेश न मिलने की वजह से किसी को शान्ति नहीं। ये बार–बार फिर दुनिया में आते–जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*ज्यों सुखना और पेखना ऐसे जग को जान।*
*इनमें कोई साचों नहीं नानक बिन भगवान।।*

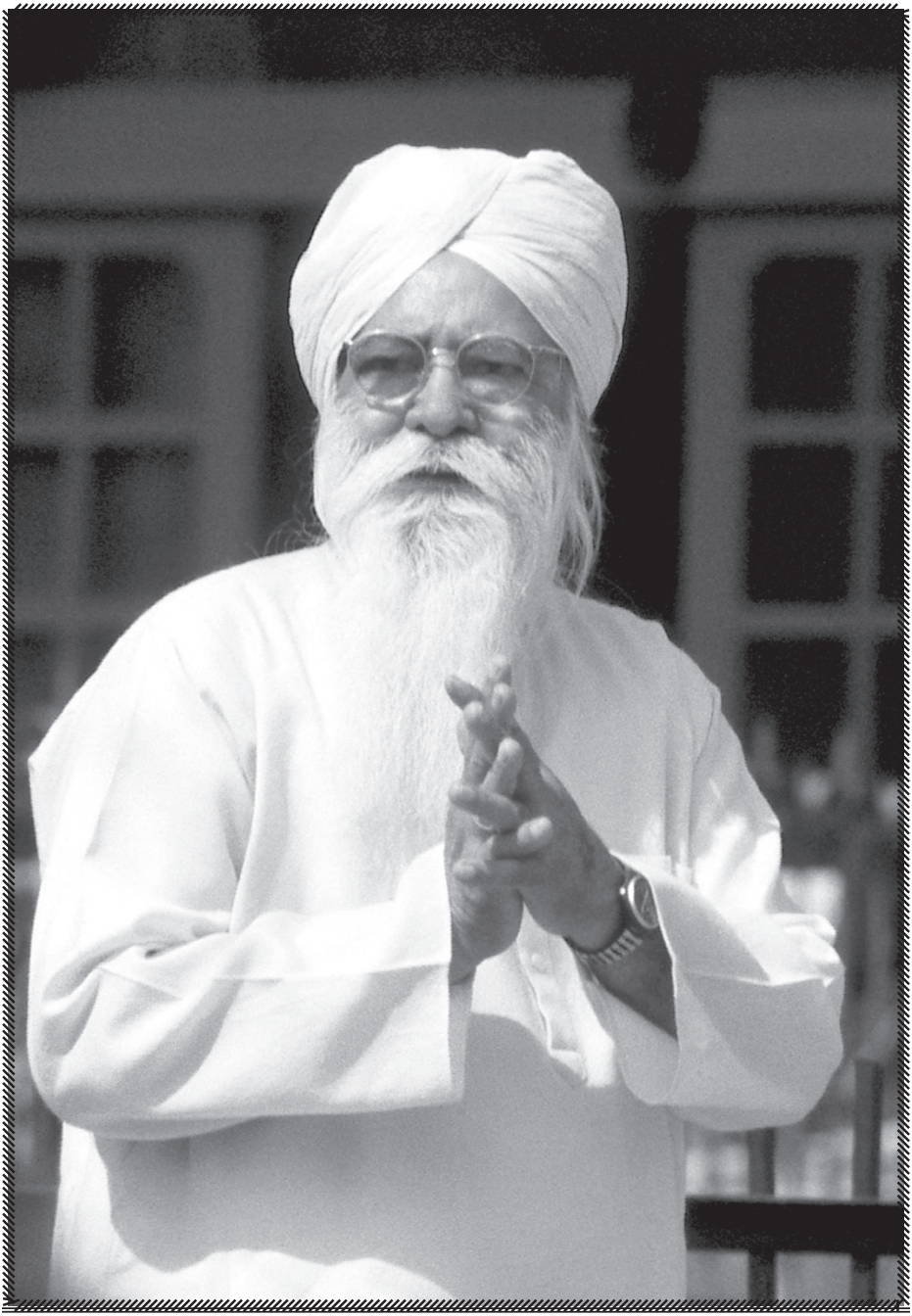

गुरु नानकदेव जी ने तो यहाँ तक कहा है:

*कुछ खाइए कुछ धर जाईए जे बहोर दुनिया आईऐ।*

अगर दोबारा दुनिया में आना हो तो कुछ खा लें और कुछ रख जाएं। एक बार शरीर छूट जाता है, आत्मा साथ छोड़ देती है तो पता नहीं कहाँ जन्म होगा और हमने कहाँ जाना है?

सन्त सच्चाई बताते हैं कि यह संसार एक स्वपन की तरह है। हम स्वपन के साथ प्यार लगाकर बैठे हैं। बहुत थोड़े लोग ही इस सच्चाई को मानते हैं। हम इन आँखों से अपने साथियों को साथ छोड़ते हुए देखते हैं, उन्हें अपने कंधों पर रखकर शमशान भूमि में छोड़कर आते हैं। तिनका भी तोड़कर आते हैं कि अब तेरा हमारा साथ टूट गया है। मिट्टी की मुट्ठी भरकर कब्र पर रख आते हैं कि अब तू हमें इस मिट्टी की तरह है। ख्याल आता है कि शायद! मौत तो औरों के लिए है हमारे लिए तो ऐश–ईशरतें, शराब–कबाब ही हैं, हम तो सदा ही यहाँ रहेंगे।

## सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे।

कबीर साहब उस सेवक से कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू आज का काम कल पर न छोड़। नाम जप, नाम के रास्ते पर चल। सतसंग में आ पता नहीं काल ने कब तुझे चौरासी लाख योनियों में धक्का दे देना है, कब तेरी बुद्धि बिगाड़ देनी है?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*जिसनूं आप कराए करता खुस लए चंगियाई।*

जिसे चौरासी लाख योनियों में भेजना है, जिसे ख्वार करना है। परमात्मा उसमें से अच्छे गुण उठा लेता है फिर इंसान अच्छा सोच भी नहीं सकता, करना तो क्या है? वह ऐसे कर्म करता है कि उसके लिए नर्क और चौरासी लाख योनियाँ तैयार ही होती हैं।

सतगुरु परमपिता कृपाल के पास ऐसे कई आदमी आए जो शिकारी थे, जिन्होंने कई कत्ल किए थे। जब महाराज जी ने उन लोगों से पूछा ,

''क्यों भई! क्या काम करते हों?'' तो उन लोगों ने सच बोला कि अब तक यह कारोबार किया है। महाराज जी ने पूछा, ''अब आपका क्या विचार है?'' उन लोगों ने कहा कि आगे के लिए तौबा है। उसके बाद वे अच्छे सतसंगी बने उन्होंने काफी भजन–अभ्यास किया, उनमें से अभी भी कई जीवित हैं। लेकिन महाराज जी के समय बहुत से अच्छे–अच्छे सतसंगी थे जो उनके जाने के बाद रास्ते से भटक गए, सतसंग–अभ्यास और गुरु का रास्ता ही छोड़ गए हैं।

प्यारेयो! जिसे गुरु की ताकत की समझ आ जाती है जो अंदर चला जाता है, वह मुँह से नम्रता वाला ही शब्द निकालेगा। वह अपने गुरु का धन्यवाद ही करेगा। वह जानता है कि गुरु में बहुत ताकत है। गुरु दिन को रात और रात को दिन बना सकता है, गुरु और क्या नहीं कर सकता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल और दयाल के अवतार जो संसार में आते हैं वे सब परमात्मा से ही ताकत लेते हैं, वे एक ही सोमे से आए होते हैं। काल के राज्य में न्याय है। आँख का बदला आँख और टाँग का बदला टाँग है, जो करता है उसे अवश्य भोगना पड़ता हैं।''

दयाल के राज्य में माफी है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि काल ने वर लिए हुए हैं कि सन्त संसार में आकर कोई करामात न दिखाएं। साधारण जिंदगी जिएं किसी को जबरदस्ती नाम न दें। सन्त जिसे भी लेकर जाएं भक्ति करवाकर ही लेकर जाएं। अगर काल के साथ ऐसे वायदे न होते तो सन्तों के लिए आत्मा को सच्चखंड लेकर जाना बहुत आसान था। एक जिले में किसी को टाँग दे दें दूसरे जिले में किसी को आँख दे दें हाँलाकि यह सन्तों के लिए बहुत मामूली होता है लेकिन सन्त कानून से बँधे होते हैं इसलिए वे ऐसा नहीं करते।

सन्त साधारण जिंदगी जीते हैं, वे अपने अंदर से खुशबू तक नहीं निकलने देते। बेशक उनके नजदीक कितने ही लोग रहते हों लेकिन बहुत

थोड़े ही ऐसे लोग होते हैं जिन्हें वे अपनी पहचान देते हैं। समुंद्र एक लोटे में बंद है लेकिन भाग्यशाली जीव उनकी रहनुमाई को समझ जाते हैं।

## बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे।

उस शिष्य का सवाल था अगर जवान रह जाते हैं तो मैं बूढ़ा होकर नाम ले लूंगा। कबीर साहब कहते हैं, ''देख प्यारेया! न बालक रह सकता है न जवान रह सकता है और न बूढ़ा ही रह सकता है। जिसने यह शरीर दिया है यह उसकी मर्जी है कि मैंने इसे कब लेकर जाना है। वह बालक, जवान या बूढ़े का लिहाज नहीं करता, यह उसकी मौज है।'' गुरु नानकदेव जी मिसाल देकर समझाते हैं, ''किसान खेती बीजता है, किसान आजाद है, चाहे किसान छोटी खेती काटे चाहे पकाकर काटे।''

## मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेया! इस शरीर में जितनी भी आत्माएं रह रही हैं ये सब चूहे की तरह हैं, यम बिल्ली की तरह है। आपको पता ही है कि जिस तरह चूहा बिल्ली की महक आते ही डर जाता है, हमारी भी यही हालत है। जब बीमारी आती है मौत का वक्त दिखता है उस समय हम अपने संबन्धियों, रिश्तेदारों से कहते हैं कि कोई अच्छा सा डॉक्टर ढूंढें। पता नहीं मौत बिल्ली ने इस जीव चूहे को कब पकड़ लेना है?''

स्वामी जी महाराज ने बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाया है कि एक बार चूहों ने सलाह की कि हमें एक–एक को बिल्ली पकड़ती है। हम सब मिलकर बिल्ली को पकड़कर खत्म कर दें। हम इतने सारे हैं कोई उसकी टाँग पकड़ेगा कोई पूँछ पकड़ेगा लेकिन बिल्ली का मुँह पकड़ने के लिए कोई चूहा तैयार नहीं हुआ। बिल्ली यह सब सुन रही थी।

***बिल्ली बिल पए आए पुकारी, आओ सूरमें बड़े सिपाही, इक इक भागे नजर न आई।***

बिल्ली ने चूहों से कहा कि आप सिपाही की तरह बातें तो करते हो आओ! मैं आ गई हूँ। सब चूहे बिल में छिप गए। हमारी यही हालत है। उस मौत का मुँह कोई डॉक्टर नहीं पकड़ सकता, कोई रिश्तेदार नहीं पकड़ सकता। जैसे चूहे को बिल्ली चबा जाती है यही हालत इस जीव की है।

**धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे।**

कबीर साहब कहते हैं, ''उसे धनी या गरीब का कोई लिहाज नहीं है। कहीं किसी के दिल में यह ख्याल हो कि रिश्वत देते ही वे हट जाएंगे। उसके लिए धनी भी वैसा ही है जैसा गरीब है।''

**राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे।।**

उस शिष्य ने सवाल किया था कि राजा, राष्ट्रपति या उसकी प्रजा को मौत नहीं आती होगी। कबीर साहब कहते हैं, ''यम बहुत जबरदस्त है वह राजा और प्रजा किसी का लिहाज नहीं करता।''

**हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे।**

आप पहले दुनिया की असलियत बताकर आए हैं कि यम किसी को नहीं छोड़ता। अब आप मालिक के प्यारों की कथा बताते हैं कि जो परमात्मा को प्यारे होते हैं, जो उसे भा जाते हैं उन्हें परमात्मा अपने घर के अंदर जगह देता है। उनकी कथा और रहनी संसार से न्यारी है।

**आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे।।**

मालिक के प्यारे सदा के लिए परमात्मा के संगी–साथी बन जाते हैं। वे न संसार में आते हैं, न जाते हैं। न जन्मते हैं, न मरते हैं। हम कमाई नहीं करते अंदर जाकर सच्चाई को नहीं देखते। इसलिए सन्तों के संसार से जाने के बाद हम लोग अलग–अलग तरफ बँट जाते हैं और दुनिया को साबित कर देते हैं कि हमारा गुरु तो मर गया है।

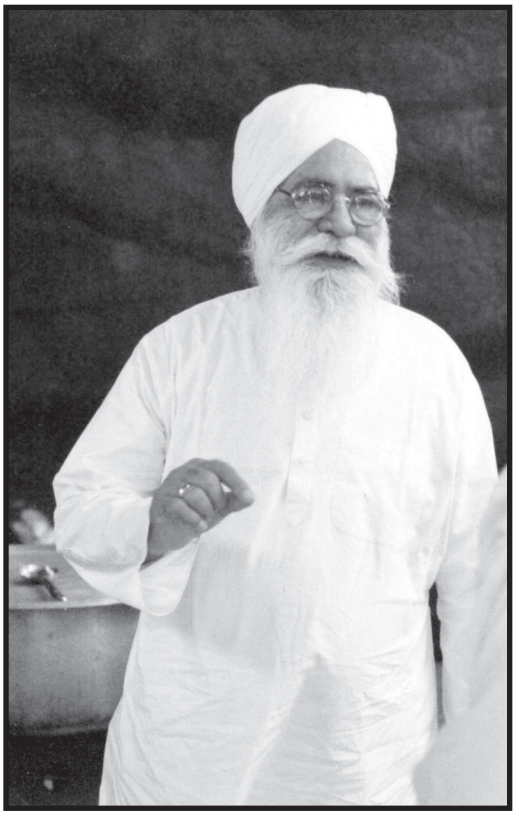

मैंने हमेशा ही संसार में जाकर यह कहा है, ''जो लोग यह कहते हैं कि हमारा गुरु मर गया है उन्हें कोर्ट में खड़ा करें कि तुमने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया? जिनका गुरु जन्म–मरण में लगा हुआ है वह हमें कैसे तार देगा। सन्त किसी को अपने शरीर के साथ नहीं बाँधते। सन्त हमें 'शब्द' के साथ जोड़ते हैं।''

'शब्द' न जन्मता है न मरता है। देह आती है और चली जाती है। देह तो हमें समझाने के लिए मिली है कि किस तरह अंदर जाना है, किस तरह नाम जपना है। सन्त नामदान के वक्त ठोस बात बताते हैं कि हमारी देह से ज्यादा हमारे वचनों की कद्र करें। सन्तों के अंदर जो वचन बोल रहा होता है वह परमात्मा ही बोलता है। कबीर कहते हैं:

***गुरु करया है देह का, सतगुरु चीन्हा नाही।***

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

***सतगुरु मेरा सदा सदा न आवे न जाए।***
***वो अविनाशी पुरुष है हर जेहा रहा समाए।।***

इसलिए सन्त भजन–सिमरन पर जोर देते हैं कि आप अंदर आकर सच्चाई को खुद देखें।

**पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे।**
**कहत कबीर सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिंगपानी रे।।**

आप प्यार से कहते हैं कि हमें यहाँ कौम का प्यार, बेटे–बेटियों का प्यार, दुनिया का प्यार बाँधकर बैठा है। आप परमात्मा की भक्ति करें तो आपको परमात्मा मिल जाएगा। प्यार ही है जिसे हमने दुनिया से हटाकर परमात्मा की तरफ लगाना है, 'शब्द' गुरु के साथ लगाना है।

हमें भी चाहिए कि हम ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करें, आज का काम कल पर न छोड़ें। अपनी आत्मा से स्थूल और सूक्ष्म पर्दा उतारें। जब तक सतसंगी पारब्रह्म में नहीं पहुँच जाता तब तक उसे मेहनत का चोर नहीं बनना चाहिए। प्यारेयो! मेहनत करनी पड़ती है। एक भजन में आता है:

***रंगरलियां मांड़देया पर्दे नहीं खुलदे करनी पवे कमाई।***

यह कमाई की चीज है यह माँगने से नहीं मिलती, खरीदने से नहीं मिलती। परमपिता कृपाल पच्चीस साल यही कहते रहे, ''देने वाले का क्या कसूर है सवाल तो लेने वाले का है।'' हमने यह सोचना है कि हमने कितनी दया प्राप्त करने के लिए अपना बर्तन बनाया है? हम यह तो जरुर कहते हैं कि दया करो, दया करो। सज्जनों! कहने की जरुरत नहीं।

***बिन मंगयां सब कुछ देत है किसपे करिए अरदास।***

वह बिना माँगे देने के लिए तैयार है। हमने अपना बर्तन बनाना है। क्या हमने अपना बर्तन बना लिया है? समझदार लोग कहते हैं अगर शेरनी का दूध रखना है तो सोने के बर्तन की जरुरत है। इसी तरह गुरु की दया को टिकाने के लिए भी हमें साफ और पवित्र हृदय बनाने की जरुरत है।

***

कबीर साहब की बानी

09 जनवरी 1994

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# दुःखों और परेशानियों का देश

मुम्बई

DVD - 255

मैं परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। हमें संसार के न इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है न इसकी गहराई और चौड़ाई का ही पता है। यह संसार विषय–विकारों से भरा हुआ समुंद्र है। कोई भाग्यशाली ही इस काजल की कोठरी से दाग लगे बिना निकल सकता है।

परमात्मा कृपाल की दया थी कि आपने हमें विषय–विकारों के जंगल में दुःखी और तड़पते हुए देखकर अपना घर सच्चखंड छोड़ा। वहाँ न विषय–विकार हैं, न दिन–रात है, न सूरज–चन्द्रमा है, न मौत–पैदाईश है, न कोई वेद–शास्त्र ही हैं और न वहाँ दुनियावी भाषाओं के झगड़े हैं। कबीर साहब कहते हैं:

***महरम होय सो जाने साधो ऐसा देश हमारा।***

हम दुनियादारों को क्या पता है कि वह किस देश का रहने वाला था, वह हमारी आत्मा पर तरस करके कितनी दूर से चलकर आया और इसके अंदर हमारे लिए कितना रहम है? पढ़े–लिखे की कद्र पढ़े–लिखे को ही होती है। कौवो व अन्य जीव–जन्तुओं को पता नहीं होता कि हंस किस देश का रहने वाला है, हंस में क्या गुण हैं। जो हंस, हंसों के देश पहुँचकर हंस बन जाता है वही हंस के देश को, हंस की गति को जानता है।

कबीर साहब कहते हैं अगर कोई उस देश को जानने वाला हो तो उसे पता है कि हम किस देश के रहने वाले हैं। यह मातलोक बिमारियों, **दुःखों और परेशानियों का देश** है। यहाँ न सुख है न शान्ति है। कहीं दिल में यह ख्याल हो कि हम तो बहुत सुखी हैं लेकिन पता नहीं कि हम

जो थोड़े बहुत सुख के साँस ले रहे हैं कब इन साँसो ने दु:खों में तबदील हो जाना है। ऐसे ही एक–दूसरे का भ्रम होता है। देखने में हमें जो सुंदर दिखता है कि इसके पास धन है, हर किस्म के साधन हैं लेकिन सच्चाई इससे उल्ट होती है। जब उसे अकेले को मिलते हैं जिसे हम सुखी और धनी समझते थे कि इसे हर चीज की सहूलियत है लेकिन उसके सिर के ऊपर बहुत दु:खों की गठरी होती है। वह बेचारा फोड़े की तरह भरा हुआ होता है, सुनकर पता चलता है कि इतना दु:खी और कौन हो सकता है?

पहले मैं सारे हिन्दुस्तान में भी नहीं घूमा था। मैंने अपना जीवन जमीन के नीचे बैठकर ही गुजारा था। मुझे अमेरिका, कनाडा, कोलम्बिया या पूर्व–पश्चिम के देशों का भी पता नहीं था। हमारे यहाँ के लोग कहते हैं कि जिसने स्वर्ग देखना है तो वह इंग्लैंड जाए। जो अमेरिका पहुँच जाता है वह कहता है कि दुनिया का स्वर्ग अमेरिका में है। बुजुर्गों से अक्सर कहानियाँ सुनते थे कि स्वर्गों में लोग बहुत सुखी हैं अगर हम अंदर जाकर स्वर्ग देखें तो वहाँ भी ऐसी ही परेशानियाँ हैं। वहाँ भी मौत–पैदाईश है, जलन है और भोग योनियां हैं।

हम कहानियाँ पढ़ते हैं कि स्वर्गों के राजा इन्द्र ने अपनी काम इन्द्री की आग बुझाने के लिए मातलोक में आकर गौतम ऋषि की धर्मपत्नी का सत भंग किया। जब स्वर्गों का राजा काम अग्नि में जलता है तो वहाँ की प्रजा को कितनी परेशानियाँ हो सकती हैं? हम वहाँ जाकर किस तरह शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

जब मैं पहले टूर पर अमेरिका गया उस समय मेरी सेहत काफी अच्छी थी। अगर उस समय की फोटो और आज की फोटो देखी जाएं तो जमीन आसमान का फर्क है। जब मुझे वहाँ सतसंग देते हुए तीन महीने हो गए और मैं वापिस आने लगा तो वहाँ के कुछ प्रेमियों ने सवाल किया कि जब आप हिन्दुस्तान से आए थे तो आपकी सेहत बहुत अच्छी थी लेकिन

अब क्या हो गया है, आप कमजोर क्यों हो गए हैं? हमने तो आपकी सहूलियत के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखी। मैंने हँसकर बहुत प्यार और हमदर्दी से कहा, ''हिन्दुस्तान के बच्चे–बच्चे से पूछें तो वे कहेंगे अमेरिका स्वर्ग है। मेरे दिल में भी ख्याल आया कि परमात्मा कृपाल ने मुझे भी स्वर्ग में भेजने के लिए चुना है, चलो दुनिया के स्वर्ग तो देखें!''

मैं जब यहाँ आया तो मुझे न स्वर्ग देखने को मिले न सुनने को ही मिले। सुबह से शाम तक जो भी मुझसे मिलने आता है वह अपने दुःखों की गठरी लाकर मेरे आगे रख देता है। जो इंसान सारा दिन दुःख ही दुःख, मुसीबतें ही मुसीबतें सुने और रोते–बिलखते हुओ को देखें क्या उसके ऊपर कोई असर नहीं होगा? दुनियादारों का दिल और होता है लेकिन रब के प्यारों का दिल मोम की तरह होता है। हजरत बाहु ने कहा था:

***आशिकां दिल मोम बराबर, माशूकां दिल काले हू।***

मोम को थोड़ी सी गर्मी मिल जाए तो वह पिघल जाती है। बेशक सन्त का कोई नामलेवा है या नहीं अगर वे ऐसी दुर्घटना सुनते हैं तो उनके दिल के ऊपर फौरन असर होता है। हमने ऐसी हालत महाराज सावन सिंह जी के समय में भी देखी, वह महापुरुष कर्मों की कैद से ऊपर थे। आपने अपने शरीर के ऊपर कितना भुगतान किया, दुःखी लोगों के कर्म अपने ऊपर लिए। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि उन्होंने हमारे ऊपर अपनी आयु भी न्यौछावर कर दी, आप दस साल पहले ही संसार से चले गए।

इसी तरह महाराज कृपाल सिंह ने पर्दे के पीछे हर एक की मदद की। हिन्दुस्तान में ही नहीं जहाँ भी किसी को दर्द था आप 'शब्द–रूप' में पहुँचे और पाँच भौतिक शरीर लेकर भी पहुँचे। आपने श्रद्धा के मुताबिक उसकी मुनासिब मदद की। आखिर यह भौतिक देह कोई मशीन नहीं होती एक दिन यह जर्जर हो जाती है, काम करना बंद कर देती है। महाराज कृपाल भी संसार से चौदह साल पहले ही अपने घर वापिस चले गए।

पिछले साल दिल्ली में जब मुझे अस्पताल से छुट्टी मिली उस समय मेरे शरीर में बहुत दर्द था। सबको पता है कि दिल्ली में मैं बग्गा परिवार के घर रूकता हूँ। उस समय गर्मी के दिन थे, काफी संगत मिलने के लिए आई। मुझे इतना ज्यादा दर्द हो रहा था जो बर्दाश्त से बाहर था, मैं काफी परेशान बैठा था। उस समय रंजीत सिंह जो पप्पू के आफिस में काम करता था, वह नामलेवा तो नहीं था उसने हाथ जोड़कर विनती की, ''जब आपको इतनी तकलीफ है तो आप आराम क्यों नहीं करते आप इन्हें जवाब दे दें।'' मैंने उसे प्यार से कहा, ''अगर तू अंदर जाता होता तो शायद! तू मुझे ये लफ्ज न कहता। मैं यहाँ अपनी मर्जी से नहीं बैठा मुझे बिठाने वाले ने बिठा रखा है।''

उस समय मेरी आँखों में पानी था। मैंने अमेरिका में भी यही कहा था कि मैंने खाना भी खाया है, मैं सोया भी हूँ। आपने मुझे जो सहूलियतें दी उसके लिए मैं आपका धन्यवादी हूँ लेकिन मेरे साथ जो बीती है उसे मैं जानता हूँ या मेरे अंदर बैठा परमात्मा कृपाल जानता है। इस **दु:खों और परेशानियों के देश** में परमात्मा कृपाल आया उसने हम दुखियों की सार ली। वह हमारे दु:खों में भाईवाल बना अगर हम दु:खी हैं तो वह हमारे साथ ही दु:खी था। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

***दास दु:खी ते मैं दु:खी।***

वह हमारी आत्मा के अंदर परमात्मा का सोया हुआ प्यार जगाने के लिए आया। जब तक हम अपने गुरुदेव के साथ सच्चा–सुच्चा प्यार नहीं करते तब तक अंदर वह मालिक दरवाजा नहीं खोलता। जब गुरु रामदास जी की आत्मा जागी उन्हें समझ आई तो आपने कहा:

***मात पिता सुत स्त्री सबहूँ ते प्यारा।***

आपके गुरुदेव ने आपके प्यार की ऐसी कद्र की कि वह आपके अंदर सारी बरकतें लेकर बैठ गए।

धर्मदास बहुत सारे कर्मकांड किया करता था। आखिर उसे कबीर साहब ने ही खोजा। गुरु हमें प्यार बख्शता है, गुरु हमारी आत्मा के अंदर पहले प्यार पैदा करता है। धर्मदास धनी धर्मदास कहलाता था, वह धोकर लकड़ियां जला रहा था। कबीर साहब साधु का रूप धारण करके आए और उन्होंने धर्मदास से कहा, ''तू बड़ा पाप कर रहा है। इन लकड़ियों में बहुत कीड़े हैं तू इन्हें जला रहा है।'' उस समय धर्मदास की धर्म पत्नी बीबी आमना पास ही खड़ी थी।

कायदा यह है कि अच्छी पत्नियां अपने पति की निन्दा नहीं सह सकती। बीबी आमना ने कहा, ''मेरा पति क्यों पापी? आप पापी हैं।'' कबीर साहब चुप करके आलोप हो गए। धर्मदास के दिल के अंदर खलबली मच गई। जब उसने लकड़ियां फाड़कर देखी तो उसमें से अनेकों ही जीव निकले। धर्मदास ने अपनी पत्नी से कहा अगर तू उस साधु को इस तरह के लफ्ज न बोलती तो मैं उस साधु से कुछ पूछता। बीबी आमना चुप रही।

कुछ दिनों बाद धर्मदास ठाकुरों की पूजा कर रहा था। कबीर साहब ने फिर उसी साधु के रूप में आकर कहा, ''ये बड़े–बड़े तो दो सेर के हैं या पाँच सेर के हैं और ये छोटी–छोटी छँटाके हैं; क्या ये कभी बोले भी हैं?'' पत्थर भक्ति सब भक्तियों से निचले दर्जे की है क्योंकि **जहाँ *आसा तहाँ वासा*** । पत्थर को पूजकर हम पत्थर ही बनेंगे। आस को मुराद कुदरती ही मिलती है।

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास तू बड़ा ही पाप कर रहा है।'' धर्मदास की पत्नी बीबी आमना से फिर भी नहीं रहा गया। कबीर साहब फिर आलोप हो गए। धर्मदास ने अपनी पत्नी से कहा, ''अगर तू उस महात्मा को ऐसा न बोलती तो मैं जरूर उनसे कुछ न कुछ पूछता।'' बीबी आमना ने कहा, ''गुड़ पर मक्खियां ढेर आप यज्ञ करें।''

धर्मदास धनी कहलाता था। उस समय करंसी की बहुत कीमत थी, धर्मदास हिन्दुस्तान में चौदह करोड़ का मालिक था। धर्मदास ने काशी, मथुरा में बहुत यज्ञ किए लेकिन वह साधु न आया और न उसने आना ही था अगर वह मक्खी होता तभी गुड़ पर आता। आखिर धर्मदास के पास जो पैसा था वह सारा ही उसने हरिद्वार के यज्ञ में खर्च कर दिया कि हरिद्वार में बहुत साधु हैं शायद वह साधु आ जाए।

जब कबीर साहब न आए तो धर्मदास के दिल में ख्याल आया कि सारा पैसा भी गया लेकिन वह महात्मा भी नहीं मिला। क्यों न अब यहीं गंगा में डूबकर मरा जाए। हमारा मन हमें वकील की तरह बहुत कुछ समझा देता है अगर दुनिया के सामने डूबकर मरा तो लोग कहेंगे कि बनिया पैसे का दुःख सह नहीं सका, आगे जाकर डूबेंगे।

जब धर्मदास थोड़ा सा आगे गया तो उसने देखा कि कबीर साहब मृगशाला पर चौंकड़ी मारकर बैठे हैं। धर्मदास ने देखा कि यह तो वही महात्मा हैं जो पहले मिलते थे। धर्मदास ने उन्हें नमस्कार की और कहा, ''महाराज जी! अगर आप मुझे पहले मिलते तो मेरे पास बहुत धन था मैं आपकी बहुत सेवा करता। अब तो मेरे पास कोई धन–पदार्थ नहीं है।'' कबीर साहब ने हँसकर कहा, ''यही वक्त मालिक को मंजूर था। तेरी पत्नी कहती थी कि गुड़ पर मक्खियां ढेर हैं लेकिन महात्मा लालची नहीं होते।''

कबीर साहब ने कहा, ''अब मैं तुझे वह वस्तु दूँगा जिसका मुकाबला दुनिया का कोई धन–पदार्थ नहीं कर सकता । मैं तुझे वह सच्चा धन दूँगा जो तेरे साथ जाएगा।'' कबीर साहब ने धर्मदास को नाम दिया। धर्मदास ने बहुत ही प्यार से नाम की कमाई की। आखिर जब दुनिया के विषय–विकारों से मुँह मोड़कर परमात्मा गुरुदेव की तरफ किया तब धर्मदास अपनी बानी में लिखते हैं:

***सुपने इच्छया न उठे, गुरु आन तुम्हारी हो।***

हे गुरु! मैं आपकी कसम खाता हूँ अगर स्वपन में भी दुनिया के किसी लालच या विषय–विकार का मेरे अंदर ख्याल हो। आखिर कबीर साहब ने अपनी जगह धर्मदास को ही प्रचार करने के लिए चुना। गुरु ही शिष्य को खोजता है। दूर नजदीक का फर्क नहीं पड़ता यह उसकी मौज है कि वह किसी के जरिए उसे अपने पास बुलाए या अंदर से ही तार हिलाए या वक्त आने पर खुद उसके पास चला जाए। आज आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। इसमें आपने शाह बल्ख बुखारे का जिक्र किया है।

शाह बलख बुखारा अपने मुल्क के अंदर काफी अच्छी हुकूमत करता था, काफी धनी था और बहुत फौजों का मालिक था। आज के जमाने में तो हम चारपाई पर इत्र छिड़क लेते हैं मकान को साफ करने के लिए दवाईयों का इस्तेमाल करते हैं लेकिन उस वक्त आज से पाँच–छह सौ साल पहले लोग फूलों का ही सहारा लेते थे। शाह बलख बुखारे की सेज पर अच्छे से अच्छे फूल बिछाए जाते थे ताकि बादशाह सलामत अच्छी नींद ले सकें। अब मालिक ही जानता है कि किसके दिल में मेरे मिलने का शौक है, विरह और तड़प है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो पहाड़ी पर खड़ा है उसे पता है कि आग कहाँ लगी है, वह आग कैसे शांत हो सकती है?'' परमात्मा सच्चखंड में बैठा है उसे हर एक के दिल की सार है। हम जो यह चलती–फिरती दुनिया देख रहे हैं यह अपने आप जमीन पर नहीं उगी न समुंद्र से निकली है, इसे बनाने और चलाने वाली कोई ताकत है। किस तरह समय पर मौत होती है पैदाईश होती है। उसने अंदर ही सारा इंतजाम किया हुआ है किस तरह खून–पसीने की नाड़ियां लगाई हुई हैं और किस तरह माँ के पेट के अंदर आकर वह महान कलाकार सजृना करता है?

एक दिन कबीर साहब रात के समय बलख बुखारा के महल पर सारबान का रूप धारण करके टहलने लगे। कबीर साहब काशी में रहते थे

और बलख बुखारा का काफी फासला है अगर आजकल भी जहाज पर जाएं तो कई घंटे लग जाएंगे। अगर हमने देह के साथ जाना है तो देह को कई कठिनाईयां आती हैं और कई साधनों की जरुरत पड़ती हैं। लेकिन जब सन्त 'शब्द–रूप' होकर कहीं जाते हैं तो वे समुंद्र पार कर जाते हैं उन्हें किसी साधन की जरूरत नहीं होती। उनका 'सुरत–शब्द' का जहाज न आग से चलता है न दुनिया के किसी ईंधन से चलता है न दुनियादारी का कोई पायलट है। परमात्मा ही उनका पायलट है, वही सब कुछ है। बस! ख्याल किया और पहुँच गए।

जब कबीर साहब रात के समय उसके महल पर टहलने लगे तो बादशाह बहुत हैरान हुआ। बादशाह का महल हो उस पर इंसान की क्या मजाल कोई चिड़िया भी नहीं फड़क सकती। नौकरों ने पूछा तू कौन है? कबीर साहब ने कहा, ''मैं सारबान हूँ मेरा ऊँट खो गया है, मैं अपना ऊँट ढूंढ़ रहा हूँ।'' नौकरों ने कहा, ''भले आदमी! ऊँट किसी जंगल में होगा न कि महलों के ऊपर चढ़ा होगा।'' जब शाह बलख बुखारा ने कबीर साहब के दर्शन किए तो उनका स्वरूप उसके दिल में बैठ गया क्योंकि बलख बुखारा ने ऐसा स्वरूप पहले कभी नहीं देखा था।

अगले दिन बलख बुखारा ने कचहरी लगाई। कबीर साहब किसी के रोकने पर नहीं रूके बड़े रौब के साथ अंदर चले गए। वहाँ जाकर कहने लगे, ''मैंने यहाँ रात काटनी है ठहरना है।'' उन लोगों ने कहा कि यह कचहरी है राजमहल है कोई मुसाफिर खाना नहीं, जहाँ आप ठहर जाएं। कबीर साहब ने कहा, ''ये महल किसने बनवाए थे?'' बलख बुखारा ने कहा, ''ये मेरे बाप–दादा ने बनवाए थे।'' कबीर साहब ने पूछा, ''अब वे कहाँ है?'' बलख बुखारा ने कहा, ''वे तो अब संसार में नहीं हैं।'' कबीर साहब ने कहा, ''क्या तू रह जाएगा?'' बलख बुखारा ने कहा, ''जब वे नहीं रहे तो मैं कैसे रह जाऊंगा।'' कबीर साहब ने कहा, ''फिर यह मुसाफिर खाना नहीं तो और क्या है?''

बलख बुखारा का दिल तो रात की घटना ने ही हिला दिया था लेकिन जब दिन में यह घटना घटी तो उसका दिल उदास हो गया। मैं बताया करता हूँ कि जिन हस्तियां के अंदर प्रभु का प्रेम जागना होता है, जिदंगी में प्रभु का मिलाप होना होता है उनके ऊपर गरीबी–अमीरी का कोई असर नहीं होता। वे गरीबी में भी कोई परवाह नहीं करते अपना सब कुछ भक्ति में लगा देते हैं। अगर अमीरी है तो उसे छोड़ने में एक सैकिंड भी नहीं लगाते। जिस तरह सर्प अपने पुराने माँस की परत बिना किसी दर्द के छोड़ जाता है उसी तरह इन हस्तियों की भी ऐसी हालत होती है।

शाह बलख बुखारा ने कुछ दिन पहले एक गुलाम खरीदा। उस गुलाम से पूछा, ''तेरा क्या नाम है तुझे किस नाम से बुलाएं?'' उसने कहा कि नौकर का क्या नखरा है। आप मुझे जिस नाम से बुलाएंगे मैं उसी में खुश हूँ। फिर उससे पूछा तू खाना कैसा खाएगा? नौकर ने कहा जो रुखा–मिस्सा दे देंगे मैं वही खा लिया करूंगा। फिर पूछा तू पहनना कैसा पसंद करेगा? नौकर ने कहा जैसा भी दे दोगे वैसा ही पहन कर खुश रहूँगा। शाह बलख बुखारा के दिल पर मालिक की भक्ति का और भी गहरा घाव हुआ कि इतने गुण तो किसी भी गुलाम में नहीं होते।

आखिर शाह बलख बुखारा सन्तों की खोज में मक्का गया। मुसलमान मक्का को पवित्र जगह मानते है। वहाँ मौहम्मद साहब का जन्म हुआ और उनका अंत भी वहीं हुआ। जिस तरह हम लोग हरिद्वार जाते हैं कि वहाँ बहुत साधु रहते हैं। जब पिछली बार गिनती हुई तो बावन लाख साधुओं की गिनती थी अगर हम इनमें से कमाई वाले महात्मा ढूंढ़े तो दो–चार मिलने भी मुश्किल हैं। कबीर साहब कहते हैं:

***सिंघों के लेहेंडे नहीं हंसो की नहीं पात।***
***लालों की नहीं बोरियां ते साध न चले जमात।।***

शेरों की टोलियाँ नहीं होती, लालों की बोरियां नहीं होती इसी तरह साधुओं के झुंड नहीं होते।

*कोटन में कोउ जो भजन राम को पावे।*

सतसंगी वह है जो सन्तों के उसूलों पर चलता है। जब शिष्य अंदर जाकर नौं द्वारों में से ख्याल को निकालकर आँखों के पीछे जाकर ज्योत प्रकट कर लेता है; आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतार देता है दसवें द्वार में पहुँचकर सच्चा साधु बन जाता है। जिस तरह बाहर बी.ए., एम.ए. की डिग्रियां हैं रूहानियत के स्कूल में भी सन्त और साधुओं की डिग्रियां हैं। सच्चखंड पहुँचकर जब सतपुरुष के साथ मिलाप हो जाता है, वह और सतपुरुष एक हो जाते हैं फिर यह सन्त बन जाता है। सन्त कोई छोटा सा लफ्ज नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

*सन्त मिले कुछ सुनिए कहिए, मिले असन्त मष्ट होय रहिए।*

अगर कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए तो उसके आगे अपना दिल खोल लें, उसके पास हमारे दर्द की दवाई है। ऐसा नहीं कि हम उसके आगे संसारिक बातें करना शुरु कर दें। हमारे अंदर असली दर्द मालिक के बिछोड़े और मौत–पैदाईश का है, जिसे हम भूले बैठे हैं।

शाह बलख बुखारा मक्का और कई जगह घूमा। हिन्दुस्तान ऋषियों–मुनियों का देश है। उसने सोचा शायद कोई साधु मिल जाए वह हिन्दुस्तान में भी आया। उसने बहुत से लोगों से पूछा किसी ने बताया कि कबीर साहब जाति के जुलाहे हैं वह मुसलमान घराने में पैदा हुए हैं, इस समय वही पूर्ण सन्त हैं। जब मुसलमान जाति का सुना तो शाह बलख बुखारा को खुशी हुई कि यह मेरी जाति के हैं हमारा अच्छा निर्वाह हो जाएगा।

शाह बलख बुखारा कबीर साहब के पास गया तो कबीर साहब ने पूछा, ''तू कहाँ से आया है, किस लिए आया है?'' उसने कहा, ''मैं शाह बलख बुखारा हूँ। मैं अपना महल, फौजें, धन–दौलत सब कुछ छोड़कर मालिक की भक्ति के लिए अपने देश से बाहर निकला हूँ। रास्ता नहीं मिला आपकी उपमा सुनकर आपके चरणों में आया हूँ।''

कबीर साहब ने कहा कि मैं एक जुलाहा हूँ और तू एक बादशाह है तेरा मेरा मेल कैसे हो सकता है? तू अच्छे–अच्छे खाने खाने वाला है लेकिन हम तो चने चबाकर भी गुजारा कर लेते हैं। तेरा हमारा गुजर कैसे होगा? इश्क–इश्क है, प्यार–प्यार है। शाह बलख बुखारा जाग उठा था उसने कहा, ''आप मुझे जो भी काम देंगे मैं वह काम ईमानदारी से करुंगा, आप जो भी रूखा–सूखा खाने के लिए देंगे मैं वह खा लिया करूंगा। मैं बादशाह बनकर नहीं एक कंगला बनकर आपके दरवाजे पर आया हूँ।''

कबीर साहब ने उसे ताणा बुनने का काम बता दिया कि तू ताणा बुनने में हमारी मदद करवाया कर यह हमारी रोजी–रोटी कमाने का धंधा है। शाह बलख बुखारा भी उसी तरह करने लगा। उसे सेवा करते हुए छह साल बीत गए। माता लोई कबीर साहब के साथ सहयोग देती थी, उसने कहा, ''यह बादशाह होकर हमारे दरवाजे पर बहुत सेवा कर रहा है, आप इसे कुछ दें।'' कबीर साहब ने कहा, ''अभी बर्तन तैयार नहीं।'' माता लोई ने कहा, ''मैं इसे जो कहती हूँ यह वही करता है। माता लोई वहाँ नहीं पहुँची थी जहाँ कबीर साहब पहुँचते थे।''

कबीर साहब ने माता लोई से कहा कि तू थोड़े से छिलके कागज वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा। जब मैं इसे अंदर बुलाऊँ और यह अंदर आने लगे तो तू छिलके इसके ऊपर फैंक देना। कबीर साहब ने बुलख बुखारा को अंदर बुलाया कि आ! तुझे कोई कारोबार बताएं। माता लोई ने उसके ऊपर छिलके फैंक दिए। बलख बुखारा ने ऊपर झाँककर कहा, ''अगर मैं बलख बुखारे में होता फिर मैं तुझे बताता और भी बहुत कुछ बोला।'' माता लोई हैरान रह गई कि इसके अंदर इतना कुछ। माता लोई ने कहा कि मैं तो इसे गरीब समझती थी। कबीर साहब ने कहा, ''मैंने तुझे कहा था कि इसके अंदर अभी बलख बुखारे की बू है।''

इस तरह छह साल और बीत गए, गुरु ही शिष्य की आत्मा को जानता है कि यह अब तैयार है या नहीं? कबीर साहब ने माता लोई से कहा, ''अब यह तैयार है।'' माता लोई ने कहा, ''मुझे तो यह पहले जैसा ही नजर आता है।'' कबीर साहब ने कहा, ''पहले तू छिलके लेकर छत पर चढ़ी थी अब गंद वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा, जब मैं इसे बुलाऊंगा तब तुम इसके ऊपर गंद फैंक देना।'' कबीर साहब ने जब बलख बुखारा को अंदर बुलाया, माता लोई ने उसके ऊपर गंद फैंका तो बलख बुखारा ने ऊपर झाँककर बहुत शान्त स्वभाव से कहा, ''मेरे ऊपर गंद फैंकने वाले तेरा भला हो, मैं तो इससे भी ज्यादा गंद से भरा हुआ हूँ।''

शाह बलख बुखारा जैसा शिष्य बनना कोई मामूली खेल नहीं। वह बादशाही को ठुकराकर बारह साल तक कबीर साहब का कारोबार करता रहा। गर्मी–सर्दी सिर पर झेली फिर भी कबीर साहब ने उसे परखकर नाम दिया। गुरु कबीर जैसा और शिष्य बलख बुखारा जैसा हो। कबीर साहब ने जब बलख बुखारा को नाम दिया उसी समय उसकी सुरत ऊपर चली गई।

आपके आगे कबीर साहब का जो शब्द रखा जा रहा है, यह इस शब्द का मुद्दा–मूल है। जब किसी आत्मा के अंदर प्यार पैदा हो जाता है तो उसे न रात को नींद आती है न दिन में कुछ अच्छा लगता है। बेशक वह दुनिया से बातें करता है लेकिन उसका दिल घड़ी की सुई की तरह उसी जगह घूमता रहता है। महात्मा चतुरदास जी कहते है:

*जैसा कम इश्क कर दस्से, ऐसा नहीं कटार सखे।*
*जख्म इश्क दे रोज लगदे, इक वार तलवार करे।*
*नन्हीं जान आशिकां वाली, इश्क ते मारो मार करे।*
*खाना रज्ज ना खांदा आशिक, निन्द्र नाल ना प्यार करे।*
*दिल अंदर तस्वीर यार दी, मुँह थी नाम पुकार करे।*
*मंत्र जंत्र कोई चलदा नाहीं, दोने नैंण फुहार करे।*
*चतुरदास ओह पूरा आशिक, जो अंदरों दीदार करे।।*

असली प्रेमी वह है जो हिदायत के मुताबिक अंदर जाकर दर्शन करता है उस स्वरूप को प्रकट कर लेता है। ऐसे प्रेमी जब अपने गुरु के स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं तो वे प्यार के किस्से–कहानियाँ सुनाते हैं। प्यार के बगैर प्यार की कहानी नहीं सुनाई जा सकती।

***इश्क ते चतर चतुराई नाल रोवदें हैं।***

प्रेमी अपने गुरु को याद करके ही नीर बहाता है। वह अपना ही दुःख बताता है, उसे संसार के दुःख से क्या मतलब? उसे अपने गुरु के बिछोड़े का दर्द है वह लोगों को होका देता है। हजरत बाहु कहते है:

***न सोवें न सवण देवे।***

जिन्हें लग जाए वह न सोते हैं और न सोने ही देते हैं। यह सुल्तान बलख बुखारे की हिस्ट्री है। गौर से कबीर साहब का शब्द सुनें:

**सुल्तान बलख बुखारे का।। सुल्तान बलख बुखारे का।**
**जिनके ओढ़न साल दुसाला, नवो तार दस तारे का।।**

कबीर साहब कहते हैं, ''जब शाह बलख बुखारे की आत्मा परमात्मा की तरफ जागी और दुनिया की तरफ से सो गई तब उसे पलटनों का, राजदरबार का और हुकूमत का मोह नहीं रहा। वह अच्छे मखमली दुशाले ओढ़ता, दुशालों पर बैठता और चलता था। अब उसने बैठने और ओढ़ने के लिए कपड़ों के टुकड़ों की गुदड़ी बना ली।''

**सो तो लागे भार उठावन, नव मन गुदरा भारे का।।**

जो फूलों की सेज पर सोता था जिसने कभी सिर पर एक फूल भी नहीं उठाया था अब वह कबीर साहब का ताणा उठाए फिरता है, वह सिर पर नौं–नौं मन भार भी उठा लेता है फिर भी कहता है मैं खुशकिस्मत हूँ कि मुझे गुरु की सेवा मिली है। गुरु की सेवा वही कर सकता है परमात्मा जिसकी अंदर से चाबी मरोड़ता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*गुरु की सेवा सफल है जे को करे चित्त लाए।*
*मन चंदेया फल पावसी हौमें विच्चो जाए।।*

**जिन के खाना अजब सराहन, मिसरी खाँड छुहारे का।**

पहले हिन्दुस्तान के बादशाह बहुत ऐश–परस्त थे। कईयों को उनका बनता हुआ खाना देखने का मौका भी मिला है। राजा–महाराजा ऐसे–ऐसे खाने खाते थे जो गरीब को तो देखने को भी नसीब नहीं होते। शाह बलख बुखारा ऐसे खाने छोड़कर कबीर साहब के यहाँ से जो रूखा–मिस्सा मिलता उसी को प्रशादी समझकर खा लेता।

**अब तो लागे बखत गुजारन, टुकड़ा साँझ सकारे का।।**

अब जो दिन गुजर जाता है बलख बुखारा गुरु का शुक्रगुजार होता है कि मेरे ऊँचे भाग्य हैं मुझे गुरु के चरणों में रहने का मौका मिला है। मैं गुरु के घर में रह रहा हूँ और गुरु की दी हुई प्रशादी खा रहा हूँ।

**जा के सँग कटक दल बादल, नौ से घोड़ कँधारे का।**

कंधार (अरब) के घोड़े दुनिया में बहुत मशहूर हैं। हिन्दुस्तान में आज भी लोग उन घोड़ों की प्रशंसा करते हैं कि वे घोड़े बहुत मजबूत और दौड़ने में तेज होते हैं। बलख बुखारा की अर्दल में हजारों घोड़े रहते थे लेकिन आज वह परमात्मा की भक्ति के लिए कबीर साहब की अर्दल करता है।

**सो सब तजि के भये औलिया, रस्ता धरे किनारे का।।**

देखो! कैसा प्यार है? जिसके मन में भक्ति का प्यार जाग जाता है उसे छोड़ने में एक सैकिंड भी नहीं लगता।

**चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावै, डासन न्यारे न्यारे का।**

मालिन बाग से अच्छे–अच्छे सुगन्धी वाले फूल लाकर बलख बुखारा के नीचे बिछाती थी लेकिन अब उसे कबीर साहब का फर्श ही अच्छा लगता है।

हम गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़ते हैं जब आपका घर–घाट लूट लिया गया। उस समय फौजें आपके पीछे लगी थी आप नंगे पैर थे और आपने जो कपड़े पहने हुए थे वह झाड़ियों में फँस–फँसकर लीरों–लीर हो चुके थे। उस समय आपने प्यार से यह शब्द उचारा:

*मित्र प्यारे नूं हाल मरीदां दा कहना।*
*तुध बिन रोग रजाईयां दे ओढ़ण नाग निवासां दे सहना।*
*सूल सुराही खंजर प्याला विंग कसाईयां दे सहना।*
*यारड़े दा सानू सत्थर चंगा भट खेड़यां दा रहना।।*

हमारे मित्र गुरु परमात्मा को मरीदों का हाल बताना। मरीद नाम मुर्दे का है। मुर्दे को नहलाने वाले की मर्जी है कि वे उसे उल्टा करके नहलाए या सीधा करके नहलाए उसके ऊपर साबुन लगाए या कोई गंद वगैरहा फैंके, मुर्दे को कोई ऐतराज नहीं। यही हालत साधु की बन जाती हैं। अब हमारी लिव उसके साथ लगी रहे। हजरत बाहू कहते हैं:

*ज्योंदयां मर रहना होये ते वेश फकीरी बहिऐ हू।*
*जे कोई सिट्टे गुद्दड़ कूड़ा वांग अरुड़ी रहिऐ हू।*
*जे कोई कड्डे गाल उलाम्बा जी जी ओहनूं कहिऐ हू।।*

**सो मरदों ने त्याग दिया है, देखो ज्ञान बिचारे का।।**
**सोलह सै साहेलरि छाड़े, साहिब नाम तुम्हारे का।**
**कहै कबीरा सुनो औलिया, फक्कर भये अखाड़े का।।**

आप प्यार से कहते हैं कि बलख बुखारे को दुनिया की बादशाही, ऐशो–ईशरत छोड़कर इस तरह का ज्ञान हुआ कि आखिर हम सबने एक दिन मौत के वक्त इस भरे बाजार को छोड़ जाना है। बहादुरी उसी की है जो इसे जीते जी छोड़ देता है। सन्तों का मतलब यह नहीं कि हम घर–बार छोड़कर बाहर निकल जाएं। कोई ही ऐसी आत्मा होती है जो ऐसा करके दिखाती है, ऐसी आत्माएं धुरधाम से बनी हुई आती हैं।

कबीर साहब के कहने का भाव कि बलख बुखारा के अंदर का ज्ञान जागा, वह अपना देश बलख बुखारा और बादशाही छोड़कर हिन्दुस्तान आया। वह बहुत सारे साधु–सन्तों से मिला आखिर उसे सच्चे सन्त कबीर साहब मिले। कबीर साहब ने उसकी तपती आत्मा को 'नामदान' देकर ठार दिया। उसे जिस चीज की भूख थी कबीर साहब ने उसकी आत्मा को जन्म–जन्मांतर की रोटी दे दी। बलख बुखारा ने भक्ति करके अपने गुरु की खुशी प्राप्त की।

हमें भी चाहिए कि हम दिल लगाकर परमात्मा की भक्ति करें। हम इस दुनिया के विषय–विकारों से न तृप्त हुए हैं न हो ही सकते हैं। आग पर जितनी ज्यादा लकड़ियां डालेंगे उतने ही ज्यादा भाँबड़ उठेंगे।

हमें चाहिए कि हम इस तन से सेवा करें लेकिन सेवा वही कर सकता है जिस पर परमात्मा दया करता है। उसने हमारे ऊपर दया कर दी है हमें नाम दिया है अपनी संगत बख्श दी है। अब हमारा फर्ज है कि हम अपने आप पर दया करें। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

***अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।***

भजन–सिमरन करके, सेवा करके, सतसंग करके हम किसी पर एहसान नहीं करते बल्कि अपने ऊपर दया करते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो अपने ऊपर दया नहीं करता उसके ऊपर और कौन दया करेगा? हम भजन–सिमरन करके ही गुरु की दया को प्राप्त करने के हकदार हो सकते हैं।'' हमें चाहिए प्रेम–प्यार से भजन सिमरन करके अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

# लाल बुझक्कड़

**बाहर गिआन धिआन इसनान।।**
**अंतरि बिआपै लोभु सुआनु।।**

इंसान बाहर तो ज्ञान–ध्यान की बातें करता है और लोगों को समझाता है लेकिन अंतर में लोभ का कुत्ता भौंक रहा है कि यहाँ से वहाँ से कुछ मिल जाए।

पुराने जमाने में हिन्दुस्तान के हर गाँव में एक लाल बुझक्कड़ हुआ करता था। एक बार एक आदमी बैलगाड़ी पर लकड़ी का कोल्हु लादकर ले जा रहा था। उस गाँव के लोगों ने पहले कभी कोल्हु नहीं देखा था। सभी अपना–अपना अंदाजा लगा रहे थे कि यह क्या चीज है? जब किसी को समझ नहीं आया तो उन्होंने अपने गाँव के लाल बुझक्कड़ को बुलाया।

लाल बुझक्कड़ कोल्हु को देखकर पहले रोया फिर हँसा। गाँव के लोगों ने उससे रोने और हँसने का कारण पूछा? लाल बुझक्कड़ ने कहा:

***बूझे लाल बुझक्कड़, होर न किसे जानी।***
***बोदी होके डिग्ग पई, रब्ब दी सुरमेंदानी।।***

मैं इसलिए रोया कि जब मैं मर जाऊँगा तो आपको ऐसी बातें कौन समझाएगा? हँसा इसलिए कि भगवान की सुरमेदानी नीचे गिर गई है।

हमारी भी यही हालत है हम परमार्थ में अंजान हैं। हम ऐसे लाल बुझक्कड़ों के पास जाते हैं जिन्होंने कभी अभ्यास नहीं किया होता, कभी अंदर नहीं गए होते; कभी चिंगारी भी नहीं देखी होती। वे सन्तों की नकल करके हमें समझाते हैं, ''आँखें बंद करें, अंदर देखें।''

***

# धन्य अजायब

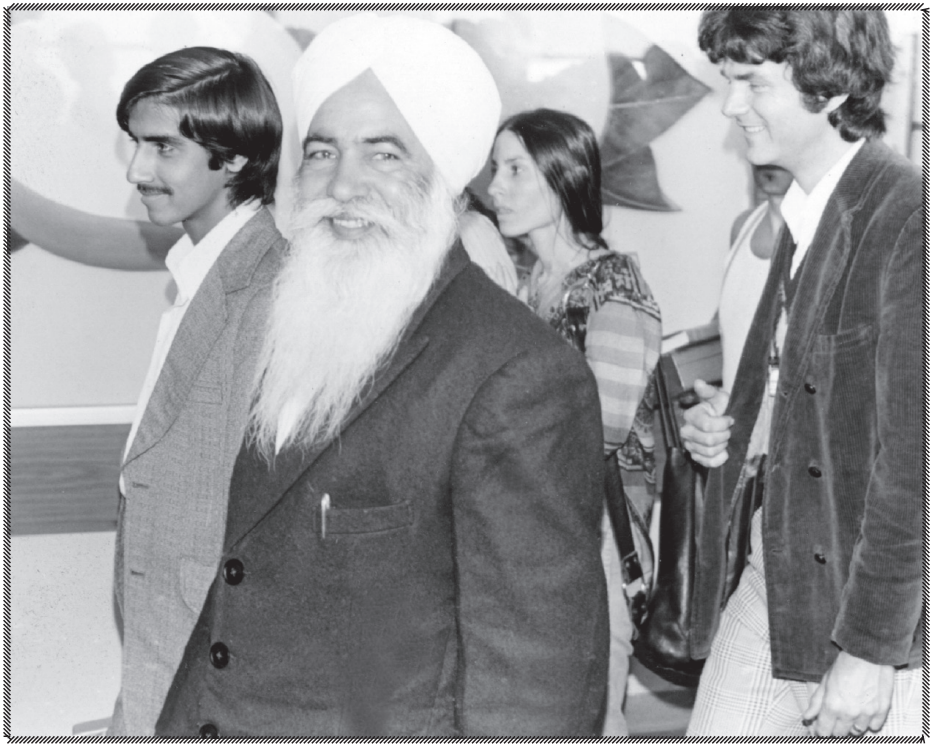

**जयपुर में** सतसंग का कार्यक्रम 31 जुलाई 01 व 02 अगस्त 2020 का है

## 16 पी. एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

06 से 12 सितम्बर 2020

02 से 04 अक्टूबर 2020

30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर 2020

04, 05 व 06 दिसम्बर 2020